

पाठ : 4 सुमित्रानंदन पंत

सुमित्रानंदन पंत: जीवन परिचय

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के छायावादी युग में सुमित्रानंदन पंत का नाम अग्रणी कवियों में लिया जाता है। प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में प्रसिद्ध पंत जी ने अपनी काव्य-साधना से हिंदी साहित्य को नया आयाम दिया। उनकी कविताओं में प्रकृति का मानवीकरण, सौंदर्य-चेतना और आध्यात्मिक गहराई विशिष्ट रूप से मिलती है। उनका जीवन और साहित्यिक यात्रा हिंदी कविता के विकास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है।

जीवन परिचय

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन:

सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई 1900 को उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के कौसानी नामक सुरम्य गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम गुसाईं दत्त था, लेकिन बाद में उन्होंने इसे बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख लिया। जन्म के कुछ ही घंटों बाद उनकी माता का निधन हो गया, जिसके कारण उनका पालन-पोषण उनकी दादी ने किया।

शिक्षा एवं प्रारंभिक रुचियाँ:

- प्रारंभिक शिक्षा कौसानी में हुई।
- अल्मोड़ा के गवर्नमेंट हाई स्कूल में पढ़ाई की, जहाँ उन्होंने अपना नाम बदला।
- 1918 में काशी के क्वींस कॉलेज में दाखिला लिया और हाई स्कूल पास किया।
- इलाहाबाद के म्योर कॉलेज से उच्च शिक्षा प्राप्त करने लगे, लेकिन 1921 में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर पढ़ाई छोड़ दी।
- इसके बाद उन्होंने स्वाध्याय के माध्यम से हिंदी, संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी साहित्य का गहन अध्ययन किया।

साहित्यिक प्रतिभा का विकास

पंत जी को बचपन से ही कविता लिखने का शौक था। मात्र सात वर्ष की आयु में उन्हें स्कूल में काव्य-पाठ के लिए पुरस्कृत किया गया। 1915 से उन्होंने नियमित रूप से कविताएँ लिखनी शुरू कीं और शीघ्र ही छायावादी काव्यधारा के प्रमुख स्तंभ के रूप में पहचाने जाने लगे।

साहित्यिक यात्रा एवं काव्य-चरण

2 Ncert Solutions of Lesson : 4 Sumitra Nandan Pant

सुमित्रानंदन पंत की साहित्यिक यात्रा को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

1. छायावादी चरण (1916–1935):

इस काल में उनकी कविताओं में प्रकृति-प्रेम, सौंदर्य-बोध और रहस्यवाद की प्रधानता थी। उनकी भाषा में संगीतात्मकता और कोमल भावनाएँ विद्यमान थीं।

प्रमुख रचनाएँ:

- वीणा (1927)
- पल्लव (1928)
- गुंजन (1932)
- ज्योत्स्ना (1934)

काव्य-विशेषताएँ:

- प्रकृति का मानवीकरण
- कोमलकांत पदावली
- रहस्यवादी भावभूमि
- सौंदर्य के प्रति आकर्षण

2. प्रगतिवादी चरण (1935–1950):

इस दौरान पंत जी मार्क्सवाद और गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित हुए। उनकी कविताओं में सामाजिक विषमताओं, गरीबी और शोषण के प्रति चेतना दिखाई दी।

प्रमुख रचनाएँ:

- युगांत (1937)
- ग्राम्या (1940)
- युगवाणी (1947)

काव्य-विशेषताएँ:

- समाजवादी विचारधारा
- यथार्थवादी दृष्टिकोण

3 Ncert Solutions of Lesson : 4 Sumitra Nandan Pant

- शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति

3. आध्यात्मिक चरण (1950-1977)

इस चरण में वे श्री अरविंद के दर्शन से प्रभावित हुए और उनकी कविताओं में आध्यात्मिकता, चेतना और ब्रह्मानंद की अभिव्यक्ति हुई।

प्रमुख रचनाएँ:

- स्वर्णधूलि (1956)
- अतिमा (1964)
- लोकायतन (1964)
- चिदंबरा (1968)

काव्य-विशेषताएँ:

- आत्मा-परमात्मा का चिंतन
- दार्शनिक गहराई
- अद्वैतवादी दृष्टिकोण

भाषा-शैली एवं काव्यगत विशेषताएँ

1. भाषा:

- संस्कृतनिष्ठ, परिष्कृत एवं मधुर भाषा।
- नवीन शब्द-योजना एवं लाक्षणिकता।

2. शैली:

- गीतात्मकता – संगीतमयता से युक्त।
- बिंब-विधान – प्रकृति के सजीव चित्र।
- प्रतीकात्मकता – गहन अर्थों की अभिव्यक्ति।

3. छंद-योजना:

- मुक्तछंद एवं गेयता का समन्वय।

प्रमुख रचनाएँ

काव्य-संग्रह	प्रकाशन वर्ष	विशेषता
वीणा	1927	छायावादी प्रकृति-चित्रण
पल्लव	1928	कोमल भावनाएँ
गुंजन	1932	प्रेम और सौंदर्य
युगांत	1937	प्रगतिवादी विचार
लोकायतन	1964	आध्यात्मिक चिंतन
चिदंबरा	1968	दार्शनिक गहराई

पुरस्कार एवं सम्मान

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार (1960) – कला और बूढ़ा चाँद के लिए।
2. पद्म भूषण (1961) – साहित्यिक योगदान हेतु।
3. ज्ञानपीठ पुरस्कार (1968) – चिदंबरा के लिए (हिंदी के प्रथम विजेता)।
4. सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार – अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मान।

निधन एवं स्मृति

28 दिसंबर 1977 को उनका निधन हुआ। उनकी स्मृति में कौसानी में "सुमित्रानंदन पंत साहित्यिक वीथिका" स्थापित की गई, जहाँ उनकी पांडुलिपियाँ और साहित्यिक सामग्री संरक्षित है।

निष्कर्ष

सुमित्रानंदन पंत हिंदी साहित्य के एक ऐसे कवि थे, जिन्होंने प्रकृति, समाज और आत्मा के विविध पहलुओं को अपनी कविताओं में समेटा। उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को प्रेरित करती हैं और हिंदी कविता के इतिहास में उनका स्थान अमर है।

प्रश्न – अभ्यास:

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

5 Ncert Solutions of Lesson : 4 Sumitra Nandan Pant

प्रश्न 1. पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1:

पावस ऋतु में प्रकृति में कई अद्भुत और मनमोहक बदलाव आते हैं। कविता के आधार पर इन बदलावों को निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है:

1. वनस्पतियों में परिवर्तन:

पावस ऋतु के आगमन से पहाड़ों का रूप-रंग पूरी तरह बदल जाता है। चारों ओर हरियाली फैल जाती है और घने वृक्ष शांत भाव से खड़े दिखाई देते हैं। कवि इसे पहाड़ के वेश बदलने जैसा वर्णन करते हैं।

2. जल भराव:

पहाड़ों के निचले हिस्सों में वर्षा का पानी भरने से बड़े-बड़े जलाशय बन जाते हैं। जगह-जगह छोटे तालाब उभर आते हैं, जो देखने में बेहद आकर्षक लगते हैं।

3. झरने का बहाव:

बारिश के मौसम में पहाड़ों से झरने फूट पड़ते हैं। जब ये झरने ऊंचाई से नीचे गिरते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे पहाड़ों पर मोतियों की चमचमाती लड़ियां लटक रही हों।

4. बादलों का खेल:

काले-घने बादलों को देखकर कवि ने उनकी तुलना पहाड़ों के उड़ते हुए पंखों से की है। वहीं तालाबों के ऊपर तैरते बादल धुएं की तरह प्रतीत होते हैं, मानो तालाबों में आग लगी हो।

निष्कर्ष:

पावस ऋतु में प्रकृति अपनी अनुपम छटा बिखेरती है। यह मौसम केवल वातावरण को शीतल और हरियाली से भरपूर नहीं करता, बल्कि मनुष्य के मन को भी उल्लास से भर देता है।

प्रश्न 2. 'मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है?

उत्तर 2:

(i) 'मेखलाकार' का शाब्दिक अर्थ:

मेखला का अर्थ है किसी वस्तु के मध्य भाग को चारों ओर से घेरने वाली डोरी, जिसे करधनी भी कहा जाता है। जो वस्तु करधनी की तरह दिखती है, उसे 'मेखलाकार' कहा जाता है। सामान्यतः यह शब्द कमरबंद के लिए प्रयोग किया जाता है।

(ii) कवि का उद्देश्य:

कवि ने इस कविता में पर्वत को 'मेखलाकार' कहा है। इसका कारण यह है कि पर्वत अपनी ऊँची और गगनचुंबी चोटियों के कारण ऐसा प्रतीत होते हैं जैसे वे किसी मेखला के आकार में बँधे हुए हों। यह उपमा पर्वतों की विशेषता और उनकी सुंदरता को प्रकट करती है।

प्रश्न 3. सहस्र दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?

6 Ncert Solutions of Lesson : 4 Sumitra Nandan Pant

उत्तर 3:

(i) अभिप्राय: 'सहस्र दृग-सुमन' का तात्पर्य पहाड़ों पर फैली हजारों वनस्पतियों और रंग-बिरंगे फूलों से है। ये फूल ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे पहाड़ की आँखें, जो प्रकृति की सुंदरता को दर्शा रही हों। विभिन्न प्रकार के दृश्य, जो इन फूलों के समान मनमोहक लगते हैं, पहाड़ की प्राकृतिक छटा को और भी अद्भुत बनाते हैं।

(ii) कवि का उपयोग: कवि ने 'सहस्र दृग-सुमन' का प्रयोग पहाड़ों की रमणीयता और उनकी अभिव्यक्ति को दर्शाने के लिए किया है। इन दृग-सुमनों से पहाड़ की सुंदरता बढ़ जाती है। पहाड़ों के नीचे बहता जलाशय विशाल और शांत दिखता है, मानो पहाड़ इन दृग-सुमनों के माध्यम से उस जलाशय को निहार रहा हो। कवि का कहना है कि यह दृश्य ऐसा प्रतीत होता है जैसे पहाड़ जलाशय में अपना ही प्रतिबिंब देख रहा हो।

प्रश्न 4. कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?

उत्तर 4:

(i) कवि ने तालाब की तुलना दर्पण से की है। पहाड़ों के बीच कई जगह तालाब होते हैं, और वर्षा ऋतु में अस्थायी तालाब भी बन जाते हैं। जब सूर्य की किरणें इन तालाबों पर पड़ती हैं, तो ये तालाब दूर से चमकते हुए दर्पण जैसे दिखाई देते हैं।

(ii) कारण: तालाब में सूर्य की परछाई स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जैसे दर्पण में किसी वस्तु की परछाई साफ नजर आती है। इस वजह से चमकते हुए तालाब भी दर्पण की तरह लगते हैं।

प्रश्न 5. पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर क्यों देख रहे थे और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं?

उत्तर 5:

(i) ऊँची आकांक्षाएँ: पर्वत के गर्भ से उठे ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर देखते हुए अपनी ऊँची आकांक्षाओं को व्यक्त करते हैं। ऐसा लगता है मानो वे आकाश को छूने और अपनी सीमाओं से परे जाने का प्रयास कर रहे हों।

(ii) गंभीरता और चिंतन: ये वृक्ष इस बात का प्रतीक हैं कि वे किसी गहन विचार में लीन हैं। गंभीर चिंतन में व्यक्ति अक्सर शांत और स्थिर हो जाता है, और वृक्षों का यह आकाश की ओर निहारना इसी स्थिति को दर्शाता है।

प्रश्न 6. शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए ?

उत्तर 6:

1. शाल के वृक्ष: शाल के वृक्ष आमतौर पर पहाड़ों पर पाए जाते हैं। कवि के अनुसार, वर्षा ऋतु में ये वृक्ष बिल्कुल शांत खड़े रहते हैं। जब वर्षा शुरू होती है, तो तेज़ हवा के झोंकों से ये वृक्ष हिलने लगते हैं, और उनमें एक हल्की सी कंपकंपी महसूस होती है।

2. भयभीत होने का कारण: वर्षा के दौरान जब तेज़ हवाएं चलती हैं और बिजली कड़कती है, तो ऐसा लगता है मानो आकाश फट पड़ा हो। इस स्थिति में ऐसा प्रतीत होता है कि शाल के वृक्ष डर के कारण धरती में धँसने का प्रयास कर रहे हों।

प्रश्न 7. झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है?

उत्तर: 7

(i) झरनों का गुणगान

वर्षा ऋतु में पहाड़ों पर अनेक स्थानों से झरने फूट पड़ते हैं, जिनसे निकलने वाली कल-कल की ध्वनि ऐसा आभास कराती है, जैसे वे पहाड़ों के गौरव की सराहना कर रहे हों। यह दृश्य प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत अनुभव प्रदान करता है।

(ii) झरनों की तुलना

पर्वतों की ऊँची-ऊँची चट्टानों से गिरने वाली जलधाराएँ, झरनों के रूप में बहती हुई, दूर से देखने पर मोतियों की सुंदर माला जैसी प्रतीत होती हैं। इसलिए झरनों की तुलना मोतियों की लड़ियों से की गई है।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. है टूट पड़ा भू पर अंबर ।

उत्तर 1: भाव - इस पंक्ति में प्रकृति की महिमा और उसका अद्भुत स्वरूप चित्रित किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे आकाश अपनी विशालता और शक्ति के साथ पृथ्वी पर टूट पड़ा हो। यह संभवतः वर्षा, बादलों के गर्जन, या तूफान का वर्णन है, जो प्रकृति की तीव्रता और भव्यता को दर्शाता है। यहाँ आकाश और पृथ्वी के संबंध की शक्ति और तात्कालिकता का अनुभव होता है।

2. यों जलद - यान में विचर - विचर

था इंद्र खेलता इंद्रजाल ।

उत्तर 2: भाव - इस पंक्ति में इंद्र देव की शक्ति और उनके अद्भुत इंद्रजाल (जादुई खेल) का वर्णन है। "जलद-यान" से तात्पर्य बादलों से है। ऐसा लगता है कि इंद्र बादलों पर सवार होकर अपनी अलौकिक शक्तियों का प्रदर्शन कर रहे हैं। यह प्राकृतिक दृश्यों में छिपे रहस्यमय सौंदर्य और शक्ति का प्रतीक है, जो उनकी दिव्यता को दर्शाता है।

3. गिरिवर के उर से उठ-उठ कर उच्चाकांक्षाओं से तरुवर

हैं झाँक रहे नीरव नभ पर

अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

उत्तर 3: भाव - इस पंक्ति में पर्वत (गिरिवर) और वृक्षों (तरुवर) के माध्यम से मानवीय उच्च आकांक्षाओं का चित्रण किया गया है। वृक्ष पर्वत की छाती से ऊपर उठकर आकाश को देखने का प्रयास करते हैं, जो मानवीय

आकांक्षाओं की ओर संकेत करता है। "अनिमेष" और "अटल" से उनके धैर्य और संकल्प का वर्णन होता है। यहाँ गहन चिंतन और आकाश की नीरवता (शांति) से जुड़ा एक दार्शनिक भाव है, जो प्रकृति के माध्यम से जीवन के गहरे रहस्यों को उजागर करता है।

कविता का सौंदर्य

1. इस कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किस प्रकार किया गया है? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर: 1

(i) पहाड़ों का मानवीकरण: कविता में पहाड़ों को मानव के रूप में कल्पित किया गया है। उन्हें मेखलाकार कहा गया है, जिसका अर्थ है कि उनकी कमर पर मानो कमरबंद बंधा हुआ हो। वह अपनी पुष्प रूपी आँखों से जलाशय में अपनी छवि को टकटकी लगाकर देख रहे हैं।

(ii) झरने का मानवीकरण: झरने को मानवीय गुणों से युक्त दिखाया गया है। यहाँ झरना पहाड़ की प्रशंसा में गीत गा रहा है।

(iii) वृक्षों का मानवीकरण: वृक्षों को ऊँची आकांक्षाओं वाले व्यक्तियों की तरह दर्शाया गया है, जो अपलक होकर आकाश की गहराई और गंभीरता को निहार रहे हैं।

2. आपकी दृष्टि में इस कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर करता है-

(क) अनेक शब्दों की आवृत्ति पर।

(ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर।

(ग) कविता की संगीतात्मकता पर।

उत्तर 2:

इस कविता का सौंदर्य चित्रात्मक भाषा पर निर्भर करता है। कविता में शब्दों की आवृत्ति विशेष रूप से आकर्षक नहीं है, और यह पूरी तरह संगीतात्मक भी नहीं है। लेकिन, शब्दों के माध्यम से चित्रात्मक भाषा का निर्माण किया गया है, जिससे कविता की आकर्षकता बढ़ गई है।

इस भाषा के जरिए वर्षा ऋतु में पर्वत के दृश्य जीवंत हो उठते हैं। उदाहरण के लिए, पहाड़ों से गिरते हुए जलप्रपात मोतियों की लड़ियों जैसे प्रतीत होते हैं। इस तरह की चित्रात्मकता ने कविता में सौंदर्य को निखारा है।

3. कवि ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पावस ऋतु का सजीव चित्र अंकित किया है। ऐसे स्थलों को छाँटकर लिखिए।

उत्तर: 3

(i) मेखलाकार पर्वत – पर्वत, जो अपनी कमर में बादल का माला बाँधे हुए हैं, जलाशय में अपने विशाल प्रतिबिंब को देख रहे हैं। पहाड़ के निचले हिस्से में पानी के समान, पावस ऋतु का दृश्य जीवंत हो उठा है।

(ii) जलप्रपात – जल की धाराएँ, जो तेजी से पहाड़ से गिरती हैं, मोतियों की लड़ी की तरह चमक रही हैं।

(iii) तरुवर – वृक्ष, जो आकाश की ओर ध्यान से देख रहे हैं, शाल के पेड़ जो गहरे पानी में डूबे हुए हैं। चारों ओर

जल भर चुका है।

(iv) बादल - पानी से भरे बादल, जो आकाश में उमड़ते हुए तालाब के ऊपर धुँ की तरह दिखाई दे रहे हैं।

योग्यता विस्तार

1. इस कविता में वर्षा ऋतु में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों की बात की गई है। आप अपने यहाँ वर्षा ऋतु में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर 1-

(i) वर्षा के समय रास्तों पर पानी भर जाता है।

(ii) तेज बारिश के कारण पेड़ गिर सकते हैं और जगह-जगह कीचड़ जमा हो जाता है।

(iii) आकाश में घने बादल मंडराते हैं, जो सूर्य और चाँद को छुपा लेते हैं।

(iv) इस ऋतु में पेड़ों पर हरियाली फैल जाती है।

परियोजना कार्य

1. वर्षा ऋतु पर लिखी गई अन्य कवियों की कविताओं का संग्रह कीजिए और कक्षा में सुनाइए।

उत्तर 1- वर्षा ऋतु पर लिखी गई कई प्रसिद्ध कविताएँ भारतीय साहित्य में मिलती हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कवियों की कविताएँ इस प्रकार हैं:

1. "वर्षा" - सुमित्रानंदन पंत

सुमित्रानंदन पंत की यह कविता वर्षा ऋतु की सुंदरता और मनोभावनाओं को व्यक्त करती है। पंत ने इस कविता में वर्षा के आगमन को प्रकृति के आनंद और जीवन में नयापन लाने के रूप में चित्रित किया है।

2. "बरसात" - दिनकर

रामधारी सिंह दिनकर की यह कविता भी वर्षा के मौसम की झंकार और प्रकृति के रंगों का चित्रण करती है। दिनकर के शब्दों में वर्षा के बादल, आकाश, और धरती की मिलनसारता की गूंज सुनाई देती है।

3. "वर्षा" - मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त की कविता में वर्षा के दौरान आकाश और धरती का मिलन, प्राकृतिक सौंदर्य और मानव मन के भावों का सुंदर चित्रण किया गया है। उनके काव्य में वर्षा ऋतु को प्रेम और अनुराग के प्रतीक के रूप में दिखाया गया है।

4. "वर्षा" - कवि प्रदीप

यह कविता वर्षा के मौसम में भारतीय जीवन की खुशी और उल्लास को दर्शाती है। कवि प्रदीप के शब्दों में वर्षा का गीत, नृत्य और हरियाली का उल्लास साफ़ झलकता है।

इन कविताओं का संग्रह करके आप कक्षा में साझा कर सकते हैं, और बच्चों को वर्षा ऋतु के प्रतीक रूप में इन कविताओं के माध्यम से प्राकृतिक सौंदर्य, मनोभावनाओं और भारतीय साहित्य की गहरी समझ दे सकते हैं।

2. बारिश, झरने, इंद्रधनुष, बादल, कोयल, पानी, पक्षी, सूरज, हरियाली, फूल, फल आदि या कोई भी प्रकृति विषयक शब्द का प्रयोग करते हुए एक कविता लिखने का प्रयास कीजिए।

उत्तर 2- बारिश की बूँदें गिरीं जैसे मोती आकाश से,
झरने की झंकृति, सुनहरे गीत गाए पास से।
इंद्रधनुष ने रंग बिखेरे, आकाश में छाए,
बादल अपनी गोदी में सूरज को छिपाए।

कोयल ने मधुर गीत गाए, बागों में हवाएँ,
पानी की लहरों में चाँद अपनी छाँव लाए।
पक्षी उड़े आकाश में, नृत्य करती बयार,
हरियाली ने साज दिया धरती को, जैसे संसार।

फूलों ने मुस्काया, हर रंग में बसी कहानी,
फल पेड़ पे झूले, ये प्रकृति की अनमोल निशानी।
हर एक कण में बसती है एक नई सृष्टि की रचना,
प्रकृति के हर स्वर में है एक अनकही सिमा।

सुमित्रानंदन पंत की कविता (पर्वत प्रदेश में पावस)

“पर्वत प्रदेश में पावस”

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।

मेखलाकार पर्वत अपार,
अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार-बार—
नीचे जल में निज महाकार!

जिसके चरणों में पला ताल,
दर्पण-सा फैला है विशाल!
गिरि का गौरव गाकर झर-झर,
मद में नस-नस उत्तेजित कर,

मोती की लड़ियों-से सुंदर,
झरते हैं झाग भरे निर्झर!
गिरिवर के उर से उठ-उठ कर,
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर,

हैं झाँक रहे नीरव नभ पर—
अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर!
उड़ गया, अचानक लो, भूधर
फड़का अपार पारद के पर!

रव-शेष रह गए हैं निर्झर!
है टूट पड़ा भू पर अंबर!
धँस गए धरा में सभय शाल!
उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!

मानो जलद-यान में विचर-विचर,
था इंद्र खेलता इंद्रजाल!

"पर्वत प्रदेश में पावस" कविता का भावार्थ:

सुमित्रानंदन पंत की यह प्रसिद्ध कविता प्रकृति के मनोहर चित्रण और ऋतु परिवर्तन के जीवंत दृश्यों को व्यक्त करती है। इसमें पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा ऋतु (पावस) के आगमन का सजीव वर्णन है, जहाँ प्रकृति पल-पल अपना रूप बदलती दिखाई देती है।

स्तरबद्ध भावार्थ:

1. प्रकृति का जीवंत रूप (पहले दोहे में):

- कवि बताते हैं कि पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु आ गई है।
- प्रकृति हर पल नया रूप धारण कर रही है—जैसे कोई नाटकीय परिवर्तन हो रहा हो।

2. पर्वत का दर्पण-सा प्रतिबिंब (अगले छंदों में):

- विशाल पर्वत मेखलाकार (कमरबंद की तरह) फैला हुआ है, जो अपनी हजारों आँखों (पर्वत की चोटियों) से नीचे झील के जल में अपने प्रतिबिंब को निहार रहा है।
- पर्वत के पैरों में विशाल तालाब दर्पण की तरह फैला है, जिसमें उसका प्रतिबिंब झलक रहा है।

3. झरनों का मोती-सा प्रवाह:

- पर्वत का गौरव गाते हुए झरने झर-झर बह रहे हैं, जिनका जल मोतियों की माला जैसा सुंदर लगता है।

12 Ncert Solutions of Lesson : 4 Sumitra Nandan Pant

- ये झरने मदमाते (उत्साहित) होकर बह रहे हैं, मानो प्रकृति की नस-नस में उत्तेजना भर गई हो।

4. वृक्षों की उच्चाकांक्षा:

- पर्वत की छाती से उगे वृक्ष ऊँचे आकाश की ओर देख रहे हैं, मानो अटल और चिंतनशील हों।
- यहाँ कवि मानवीकरण करते हैं—वृक्षों को उच्चाकांक्षी बताया गया है, जो नीरव आकाश की ओर टकटकी लगाए हैं।

5. अचानक परिवर्तन का दृश्य (नाटकीय मोड़):

- अचानक बादलों का विस्फोट होता है—पर्वत मानो पारद (पारा/बादल) के पंख लगाकर उड़ गया हो!
- झरनों का शोर शांत हो जाता है, और आकाश जमीन पर टूट पड़ता हुआ प्रतीत होता है।
- वृक्ष धरती में धँसने लगते हैं, तालाब का जल जलकर धुँ में बदल जाता है—मानो प्रकृति का विनाश हो रहा हो।

6. इंद्र के इंद्रजाल की कल्पना (अंतिम दोहे में):

- कवि कल्पना करते हैं कि बादलों के रथ (जलद-यान) पर सवार इंद्रदेव यह सब जादू (इंद्रजाल) रच रहे हैं।
- यहाँ वर्षा को दैवीय लीला के रूप में दिखाया गया है, जहाँ प्रकृति के सारे रूप मायावी प्रतीत होते हैं।

कविता का मुख्य संदेश:

- प्रकृति की अनंत शक्ति और रहस्यमयता को दर्शाती है।
- मनुष्य और प्रकृति के अद्भुत सम्बन्ध को चित्रित करती है।
- ऋतु परिवर्तन की गतिशीलता को काव्यात्मक भाषा में व्यक्त किया गया है।
- अंत में, कवि यह सुझाते हैं कि प्रकृति के ये परिवर्तन ईश्वरीय लीला का हिस्सा हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्रकृति का चित्रण किस प्रकार मिलता है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की कविताएँ प्रकृति प्रेम से ओत-प्रोत हैं। उनकी प्रारंभिक रचनाओं में हिमालय, झरने, वनों और आकाश का सौंदर्य जीवंत हो उठता है। उनकी कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' में पहाड़ों की सौंदर्यता, बदलते दृश्य और इंद्रधनुषी कल्पनाएँ मन को मोह लेती हैं। पंत की भाषा में सौंदर्यबोध, रहस्यवाद और अध्यात्म का अद्भुत मेल देखने को मिलता है।

13 Ncert Solutions of Lesson : 4 Sumitra Nandan Pant

प्रश्न 2: सुमित्रानंदन पंत को छायावाद के प्रमुख कवि क्यों माना जाता है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत छायावाद युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। उनकी कविताओं में भावुकता, कल्पनाशीलता और प्रकृति का सौंदर्य बारीकी से उकेरा गया है। वे मानव मन की गहराइयों और आत्मिक अनुभूतियों को छायावादी शैली में प्रस्तुत करते हैं। उनकी रचनाएँ हिंदी कविता को एक नया सौंदर्यबोध प्रदान करती हैं, जिससे वे छायावाद के प्रतिनिधि कवि बनते हैं।

प्रश्न 3: सुमित्रानंदन पंत के विचारों पर किन व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत के विचारों पर आरंभ में प्रकृति प्रेम और रहस्यवाद का प्रभाव था, परंतु बाद में वे महात्मा गांधी और कार्ल मार्क्स से भी प्रभावित हुए। उनके काव्य में अरविंद दर्शन की झलक भी देखने को मिलती है। यह प्रभाव उनकी रचनाओं को केवल सौंदर्य तक सीमित नहीं रखता बल्कि सामाजिक और दार्शनिक गहराई भी प्रदान करता है।

प्रश्न 4: 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में सुमित्रानंदन पंत ने वर्षा ऋतु का वर्णन कैसे किया है?

उत्तर: 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में सुमित्रानंदन पंत ने वर्षा ऋतु के सौंदर्य को अत्यंत मनोहारी ढंग से चित्रित किया है। वे बदलते पर्वतीय दृश्य, झरने, तालाब और आकाश के रंगों को संवेदनशील भाषा में प्रस्तुत करते हैं। कविता में प्रतीकों और उपमाओं का सुंदर प्रयोग करके उन्होंने वर्षा के रोमांच और भावनात्मक असर को प्रभावशाली बनाया है।

प्रश्न 5: सुमित्रानंदन पंत को कौन-कौन से पुरस्कार प्राप्त हुए थे?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत को उनके साहित्यिक योगदान के लिए अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले। 1960 में उन्हें 'कला और बूढ़ा चाँद' काव्य संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। 1969 में 'चिदंबरा' संग्रह पर उन्हें पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1961 में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया। ये पुरस्कार उनकी साहित्यिक महानता को दर्शाते हैं।

प्रश्न 6: सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में रहस्यवाद का क्या स्थान है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की आरंभिक कविताओं में रहस्यवाद एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उभरता है। उनकी रचनाओं में प्रकृति केवल भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और रहस्यमयी स्वरूप में प्रकट होती है। यह रहस्यवाद उनके गहन चिंतन और दार्शनिक दृष्टिकोण को दर्शाता है, जिससे पाठक प्रकृति और जीवन के सूक्ष्म पक्षों को आत्मसात करता है।

प्रश्न 7: सुमित्रानंदन पंत का जीवन और साहित्यिक यात्रा किस प्रकार प्रेरणादायक है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत का जीवन साहित्य के प्रति समर्पण की मिसाल है। मात्र सात वर्ष की उम्र में पुरस्कृत होकर उन्होंने कविता का आरंभ किया और 1915 से साहित्य को पूरी तरह समर्पित कर दिया। उनकी यात्रा में प्रकृति प्रेम, राष्ट्रवाद, दार्शनिकता और सामाजिक चेतना सबका संगम दिखता है। उनका जीवन हर साहित्य प्रेमी के लिए प्रेरणास्रोत है।

14 Ncert Solutions of Lesson : 4 Sumitra Nandan Pant

प्रश्न 8: पंत जी की कविताओं में प्रकृति का मानवीकरण कैसे झलकता है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्रकृति सजीव रूप में प्रस्तुत होती है। 'पर्वत प्रदेश में पावस' में पर्वतों को 'मेखलाकार' और निर्झरों को 'मोती की लड़ियों' जैसा कहा गया है। उनकी शैली में पर्वत, वृक्ष, जल और आकाश सब मानवीय भावनाओं से भर उठते हैं। यह मानवीकरण पाठकों को गहराई से प्रकृति से जोड़ता है।

प्रश्न 9: महाप्राण निराला ने सुमित्रानंदन पंत के बारे में क्या कहा था?

उत्तर: महाप्राण निराला ने सुमित्रानंदन पंत की शैली की सराहना करते हुए कहा था कि उनमें 'शैली' की भांति विषय को उपमाओं से सँवारने की अद्भुत क्षमता है। पंत जी की भाषा कोमल, मधुर और कलात्मक है, जो विषय को सौंदर्य की चरम सीमा तक पहुँचाती है। यह प्रशंसा पंत जी की साहित्यिक प्रतिभा का प्रमाण है।

प्रश्न 10: सुमित्रानंदन पंत की कविता का शिल्प पक्ष कितना सशक्त है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की कविता का शिल्प पक्ष अत्यंत सशक्त और कलात्मक है। वे शब्दों का चयन बहुत सावधानी से करते हैं और उपमाओं, रूपकों का सुंदर प्रयोग करते हैं। उनकी कविताओं में लय, छंद और ध्वनि प्रभाव पाठकों को आकर्षित करता है। उनका शिल्प पक्ष हिंदी कविता को नयी ऊँचाई प्रदान करता है।

प्रश्न 11: 'पल्लव' और 'वीणा' जैसे संग्रह सुमित्रानंदन पंत की काव्य यात्रा में क्या स्थान रखते हैं?

उत्तर: 'पल्लव' और 'वीणा' सुमित्रानंदन पंत की प्रारंभिक कविताओं का संकलन हैं, जो उनके छायावादी युग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन संग्रहों में प्रकृति, सौंदर्य और आत्मा की गहराई से जुड़ी अनुभूतियाँ मिलती हैं। ये काव्य संग्रह उनकी कोमल भावनाओं और सशक्त कल्पनाशक्ति का उदाहरण हैं, जिन्होंने हिंदी काव्य को नई दिशा दी।

प्रश्न 12: सुमित्रानंदन पंत का साहित्यिक योगदान आधुनिक हिंदी कविता में किस रूप में जाना जाता है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत का साहित्यिक योगदान आधुनिक हिंदी कविता के आधार स्तंभ के रूप में जाना जाता है। वे छायावाद आंदोलन के प्रमुख कवि रहे और उनकी कविताओं ने हिंदी साहित्य में सौंदर्यबोध, रहस्यवाद और आत्मचिंतन का समावेश किया। उनके प्रयोगधर्मी दृष्टिकोण और शैली ने कविता को भावनात्मक, दार्शनिक और कलात्मक दिशा दी।

प्रश्न 13: सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में पर्वतीय सौंदर्य कैसे प्रकट होता है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में पर्वतीय सौंदर्य बहुत ही जीवंत रूप में प्रकट होता है। 'पर्वत प्रदेश में पावस' जैसी रचनाओं में हिमालय, जलधाराएँ, बादल और पेटों के दृश्य अत्यंत मनोहारी ढंग से चित्रित हैं। उनका जन्म स्थान कौसानी स्वयं एक सुंदर पर्वतीय क्षेत्र था, जिसने उनके काव्य को हिमालयी सौंदर्य से भर दिया।

प्रश्न 14: सुमित्रानंदन पंत ने लोकायतन संस्था की स्थापना क्यों की थी?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत ने लोकायतन संस्था की स्थापना भारतीय संस्कृति और लोक कलाओं के प्रचार-प्रसार के लिए की थी। इस संस्था के माध्यम से वे भारतीय जीवन मूल्यों और सांस्कृतिक चेतना को साहित्यिक मंच

15 Ncert Solutions of Lesson : 4 Sumitra Nandan Pant

प्रदान करना चाहते थे। उनका उद्देश्य समाज को कला, साहित्य और दर्शन के माध्यम से जोड़ना था, जो उनकी व्यापक दृष्टि को दर्शाता है।

प्रश्न 15: पंत जी की कविताओं में आध्यात्मिक तत्वों की क्या भूमिका रही है?

उत्तर: पंत जी की कविताओं में आध्यात्मिकता एक महत्वपूर्ण पक्ष रही है। उनके जीवन में अरविंद दर्शन का गहरा प्रभाव पड़ा, जो उनकी कविताओं में आत्मा, ब्रह्म और ईश्वर के प्रतीकों में प्रकट होता है। उन्होंने भौतिक सौंदर्य के साथ-साथ आध्यात्मिक सौंदर्य को भी कविता में स्थान दिया, जिससे उनकी रचनाएँ अध्यात्म और काव्य का संगम बन जाती हैं।

प्रश्न 16: पंत जी के काव्य में प्रेम की भावना किस रूप में प्रकट होती है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत के काव्य में प्रेम एक विशुद्ध, आध्यात्मिक और प्रकृति से जुड़ा हुआ भाव है। वे प्रेम को आत्मा की पुकार और जीवन की सबसे सुंदर अनुभूति मानते हैं। उनके प्रेम गीतों में कोमलता, करुणा और आदर्श की भावना होती है। प्रेम उनके लिए केवल सांसारिक नहीं, बल्कि ब्रह्म से मिलने की साधना बन जाता है।

प्रश्न 17: छायावादी काव्यधारा में सुमित्रानंदन पंत का क्या योगदान रहा?

उत्तर: छायावादी काव्यधारा के चार प्रमुख स्तंभों में सुमित्रानंदन पंत का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस युग को कोमल भावनाएँ, प्रकृति की अभिव्यक्ति और कल्पनाशील भाषा दी। पंत जी की कविताओं ने छायावाद को एक स्वप्निल और भावनात्मक ऊँचाई प्रदान की। उन्होंने आत्मा, प्रकृति और सौंदर्य को एक साथ मिलाकर कविता को विशिष्ट रूप दिया।

प्रश्न 18: सुमित्रानंदन पंत की कविता में 'ध्वनि' और 'छवि' का क्या स्थान है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की कविता में 'ध्वनि' और 'छवि' का अद्वितीय समन्वय देखने को मिलता है। उनकी रचनाएँ केवल अर्थ नहीं, ध्वनि के सौंदर्य से भी पाठक को प्रभावित करती हैं। उपमाओं और रूपकों के माध्यम से वे ऐसे चित्र खींचते हैं जो आँखों के सामने सजीव हो उठते हैं। उनकी कविता पढ़ते हुए पाठक ध्वनि, गंध और रंग का अनुभव करता है।

प्रश्न 19: 'चिदंबरा' काव्य संग्रह की विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: 'चिदंबरा' सुमित्रानंदन पंत का एक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह है, जिसे ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसमें दर्शन, सौंदर्य और आत्मबोध का अद्भुत समन्वय है। इस संग्रह की कविताएँ गूढ़, गंभीर और गहन आध्यात्मिक अनुभूतियों से भरपूर हैं। इसमें पंत जी का चिंतनशील कवि रूप स्पष्ट होता है जो आत्मा और ब्रह्म की तलाश में रचनात्मक यात्रा करता है।

प्रश्न 20: सुमित्रानंदन पंत आज भी प्रासंगिक क्यों हैं?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत आज भी इसलिए प्रासंगिक हैं क्योंकि उनके काव्य में प्रकृति, प्रेम, सौंदर्य, सामाजिक चेतना और आत्मबोध सभी का समावेश है। उन्होंने केवल युग की नहीं, बल्कि मानवता की आवाज़ को अपनी कविता

में स्थान दिया। आज जब प्रकृति संकट में है और समाज द्वंद में, पंत जी की संवेदनशील और जागरूक दृष्टि हमें दिशा देने का कार्य करती है।

प्रश्न 21: सुमित्रानंदन पंत की प्रारंभिक कविताओं में किस प्रकार की विशेषताएँ दिखाई देती हैं?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति प्रेम और रहस्यवाद की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। वे पहाड़ों, झरनों और प्राकृतिक सौंदर्य से इतने प्रभावित थे कि उनकी रचनाएँ हिमालय की गोद जैसी प्रतीत होती हैं। उनकी कविताओं में सौंदर्य, शांति और भावनात्मक कोमलता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। यही विशेषताएँ उन्हें छायावाद का प्रमुख स्तंभ बनाती हैं।

प्रश्न 22: सुमित्रानंदन पंत छायावादी काव्य धारा में किस रूप में प्रतिष्ठित हैं?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत छायावादी काव्यधारा के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उन्होंने हिंदी कविता को भावनात्मकता, कल्पनाशीलता और प्रकृति प्रेम से समृद्ध किया। उनके काव्य में आत्मा की गहराइयों को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त किया गया है। पंत जी की शैली मधुर, कोमल और अत्यंत चित्रात्मक है, जिससे वे छायावाद युग के प्रतिनिधि कवियों में सम्मिलित हुए।

प्रश्न 23: सुमित्रानंदन पंत के जीवन में गांधी और मार्क्स के विचारों का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत के जीवन और काव्य में महात्मा गांधी और मार्क्स के विचारों का प्रभाव उनके काव्य की दिशा को बदलने वाला सिद्ध हुआ। प्रारंभ में वे केवल प्रकृति और रहस्यवाद तक सीमित थे, परंतु बाद में उन्होंने सामाजिक विषमता, समानता और मानव कल्याण जैसे विषयों पर लेखन किया। इससे उनके काव्य में व्यापकता और सामाजिक चेतना का समावेश हुआ।

प्रश्न 24: सुमित्रानंदन पंत के साहित्य में अरविंद दर्शन का क्या प्रभाव दिखाई देता है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत के उत्तरकालीन साहित्य में अरविंद दर्शन का प्रभाव प्रमुख रूप से देखा जा सकता है। उन्होंने आध्यात्मिकता, आत्मा की खोज और ब्रह्मांडीय चेतना को अपने काव्य का आधार बनाया। उनकी रचनाओं में भौतिक जगत से परे की चेतना को दर्शाने वाले विचार मिलते हैं। यह दर्शाता है कि पंत जी का कवि मन निरंतर आत्मिक विकास की ओर अग्रसर था।

प्रश्न 25: सुमित्रानंदन पंत को प्राप्त प्रमुख पुरस्कार कौन-कौन से हैं?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत को उनके अद्भुत साहित्यिक योगदान के लिए अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्हें 1960 में 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1969 में 'चिदंबरा' काव्य संग्रह पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। वे हिंदी के पहले ज्ञानपीठ विजेता भी बने। 1961 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। ये पुरस्कार उनकी रचनात्मक श्रेष्ठता के प्रतीक हैं।

प्रश्न 26: सुमित्रानंदन पंत के प्रमुख काव्य संग्रह कौन-कौन से हैं?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत के प्रमुख काव्य संग्रहों में 'वीणा', 'पल्लव', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'स्वर्णकिरण' और 'लोकायतन' उल्लेखनीय हैं। इन काव्य संग्रहों में प्रकृति का सौंदर्य, समाज की चिंता, दर्शन और मानवीय

संवेदनाएँ प्रमुख रूप से अभिव्यक्त हुई हैं। 'चिदंबरा' और 'कला और बूढ़ा चाँद' जैसे संग्रहों ने उन्हें हिंदी साहित्य में स्थायी स्थान दिलाया।

प्रश्न 27: सुमित्रानंदन पंत की कविता "पर्वत प्रदेश में पावस" में कौन से दृश्य चित्रित किए गए हैं?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की कविता "पर्वत प्रदेश में पावस" में वर्षा ऋतु में पर्वतीय क्षेत्र का अत्यंत मनोहारी और गतिशील दृश्य प्रस्तुत किया गया है। कविता में झरनों की गूंज, पर्वत श्रृंखलाओं की भव्यता, बदलता आकाश, जलधाराएँ और इंद्रजाल सा प्रभाव उत्पन्न करती घटनाएँ दर्शाई गई हैं। यह कविता पंत जी की प्रकृति चित्रण की अद्भुत क्षमता को दर्शाती है।

प्रश्न 28: महाप्राण निराला ने सुमित्रानंदन पंत की किस विशेषता की प्रशंसा की थी?

उत्तर: महाप्राण निराला ने सुमित्रानंदन पंत की विशेषता के रूप में उनके शैली कौशल की अत्यधिक प्रशंसा की थी। उन्होंने कहा कि पंत जी, अंग्रेजी कवि 'शैली' की तरह विषय को सुंदर उपमाओं से सजा कर मधुर और कोमल बना देते हैं। यह कथन पंत जी की भाषा की सुसज्जितता, कल्पनाशक्ति और शब्द सौंदर्य को प्रमाणित करता है।

प्रश्न 29: सुमित्रानंदन पंत के साहित्यिक जीवन की शुरुआत कब और कैसे हुई?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत का साहित्यिक जीवन बहुत कम उम्र में शुरू हुआ। उन्होंने सात वर्ष की उम्र में कविता पाठ के लिए पुरस्कार प्राप्त किया। 1915 में उन्होंने स्थायी रूप से साहित्य सृजन आरंभ किया। धीरे-धीरे वे हिंदी के छायावादी युग के प्रमुख कवि बन गए। उनका प्रकृति प्रेम, भाषा की मधुरता और काव्य में भावनात्मक गहराई उन्हें विशेष बनाती है।

प्रश्न 30: सुमित्रानंदन पंत की कविताएँ पाठकों को किस प्रकार की अनुभूति कराती हैं?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की कविताएँ पाठकों को ऐसी अनुभूति कराती हैं, जैसे वे स्वयं किसी पर्वतीय स्थान पर मौजूद हों। उनकी कविता पढ़ते हुए लगता है कि हमारे चारों ओर की दीवारें हट गई हैं और हम झरनों, फूलों और बादलों से घिरे किसी रमणीय स्थल पर खड़े हैं। यह विशेषता उन्हें प्रकृति के सजीव चित्रकार के रूप में स्थापित करती है।

प्रश्न 31: सुमित्रानंदन पंत की भाषा शैली की विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की भाषा शैली अत्यंत कोमल, मधुर, चित्रात्मक और भावप्रधान है। उन्होंने खड़ी बोली को काव्य की भाषा के रूप में अपनाकर उसे सौंदर्य और संवेग से समृद्ध किया। उनकी शैली में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली, नवीन उपमाएँ और कल्पना की ऊँचाई विशेष रूप से दिखाई देती है। यह सब मिलकर उनकी कविताओं को एक स्वप्निल सौंदर्य प्रदान करते हैं।

प्रश्न 32: सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्रकृति का क्या स्थान है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्रकृति एक जीवंत पात्र की तरह उपस्थित रहती है। वे प्रकृति को केवल सजावटी पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि संवेदनात्मक अनुभवों की वाहिका मानते हैं। फूल, बादल, पर्वत, झरने – सब उनकी

कविता में सजीव हो उठते हैं। उनकी रचनाओं में प्रकृति के माध्यम से आत्मा की गहराइयों और ब्रह्मांडीय चेतना की झलक मिलती है।

प्रश्न 33: पंत जी की कविता में आधुनिक चेतना कैसे परिलक्षित होती है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की कविता में आधुनिक चेतना उनके उत्तरकालीन काव्य में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। उन्होंने विज्ञान, समाजवाद, मानवतावाद और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण को अपनी कविताओं में स्थान दिया। 'युगवाणी' और 'लोकायतन' जैसे संग्रहों में उन्होंने समकालीन समस्याओं, समाज की विषमता और मानव अधिकारों की चर्चा की। इससे वे केवल प्रकृति कवि नहीं, एक सजग विचारक भी सिद्ध होते हैं।

प्रश्न 34: सुमित्रानंदन पंत के विचारों में मानवतावाद की अभिव्यक्ति कैसे होती है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत के काव्य में मानवतावाद की भावना गहराई से विद्यमान है। वे मनुष्य को प्रकृति और ब्रह्मांड का केंद्र मानते हैं। उन्होंने सामाजिक विषमता, गरीबी, शोषण और वर्गभेद के विरुद्ध आवाज़ उठाई। पंत जी का मानना था कि मानवता ही सच्चा धर्म है। उनकी कविताएँ मनुष्यता की गरिमा, स्वतंत्रता और आत्मविकास की ओर संकेत करती हैं।

प्रश्न 35: सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में नारी की भूमिका क्या है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में नारी को सौंदर्य, करुणा और प्रेरणा का स्रोत माना गया है। प्रारंभिक कविताओं में वे नारी को सौंदर्य के प्रतीक रूप में प्रस्तुत करते हैं, जबकि उत्तर कालीन रचनाओं में नारी को एक आत्मनिर्भर, जागरूक और संघर्षशील रूप में चित्रित किया गया है। इससे पंत जी की नारी संबंधी दृष्टि में विकास और व्यापकता स्पष्ट होती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1: सुमित्रानंदन पंत की कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' का मुख्य विषय क्या है?

उत्तर: इस कविता में पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा ऋतु के सौंदर्य और परिवर्तनशील दृश्य को वर्णित किया गया है। सुमित्रानंदन पंत ने प्रकृति को मानवीय संवेदनाओं से जोड़ते हुए वर्षा के सौंदर्य, शांति और प्रभाव को अत्यंत भावनात्मक रूप से प्रस्तुत किया है।

प्रश्न 2: कविता में कवि ने 'नभ का चिर विरस चित्र' क्यों कहा है?

उत्तर: 'नभ का चिर विरस चित्र' कहकर कवि ने आकाश की नीरसता और एकरसता को दर्शाया है, जो बादलों से आच्छादित होने के कारण भावहीन और उदास सा प्रतीत होता है। यह पंक्ति वर्षा से पहले के उदास वातावरण को उजागर करती है।

प्रश्न 3: 'ज्यों जलद ने घेर ली हो प्रियतम को बाहों में' - इस उपमा का क्या आशय है?

उत्तर: इस उपमा में कवि ने बादलों द्वारा पहाड़ों को घेरे जाने की स्थिति की तुलना प्रेमी द्वारा प्रिय को बाहों में भरने से की है। यह प्राकृतिक दृश्य को मानवीय प्रेम भाव से जोड़ता है, जिससे सौंदर्य और संवेदना दोनों उभरते हैं।

प्रश्न 4: सुमित्रानंदन पंत की कविता में प्रकृति का चित्रण किस प्रकार किया गया है?

उत्तर: पंत जी ने प्रकृति का चित्रण अत्यंत कोमल, सौंदर्यमय और भावनात्मक रूप में किया है। वे प्रकृति को एक जीवंत प्राणी की भाँति चित्रित करते हैं, जिसमें प्रेम, करुणा और माधुर्य की अनुभूति होती है। पर्वतीय वर्षा का दृश्य अत्यंत मनोहारी बन गया है।

प्रश्न 5: कविता में कवि ने 'प्रकृति का नव श्रृंगार' किसे कहा है?

उत्तर: 'प्रकृति का नव श्रृंगार' से आशय है – वर्षा के कारण प्रकृति का नया सौंदर्य। चारों ओर हरियाली, झरनों का कलकल, फूलों की महक और बादलों का घेराव – यह सब मिलकर प्रकृति को एक दुल्हन की तरह सजा देते हैं, जो अत्यंत मोहक प्रतीत होती है।

प्रश्न 6: 'गगन घटा घन घोर गभीर' पंक्ति का सौंदर्य क्या है?

उत्तर: इस पंक्ति में अनुप्रास और वर्णनात्मक शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है। 'घ' ध्वनि की आवृत्ति से बादलों की गंभीरता, गूँज और वातावरण की गंभीरता उभरती है। यह पंक्ति आकाश की गहराई और वर्षा के पूर्व के भावों को जीवंत करती है।

प्रश्न 7: कविता में वर्षा ऋतु को कितना प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत ने वर्षा ऋतु को अत्यंत प्रभावशाली और जीवनदायिनी रूप में प्रस्तुत किया है। यह न केवल प्रकृति को नवजीवन देती है, बल्कि मनुष्य के अंतर्मन को भी शांति, प्रेम और सौंदर्य की अनुभूति कराती है। उनका चित्रण गहन अनुभूति से भरपूर है।

प्रश्न 8: 'कितनी सजीव कल्पना है पंत की कविता में?'

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की कविता में कल्पना इतनी सजीव है कि पाठक स्वयं को पर्वत पर खड़ा महसूस करता है। बादलों का आलिंगन, वर्षा की बूँदें, हरियाली की छाया – सब कुछ जीवंत हो उठता है। यह कल्पनाशक्ति पाठक को दृश्य का साक्षी बना देती है।

प्रश्न 9: कविता में 'पावस' को किस दृष्टिकोण से देखा गया है?

उत्तर: कविता में 'पावस' को केवल प्राकृतिक घटना न मानकर, एक आत्मीय और संवेदनशील अनुभूति के रूप में देखा गया है। पावस कवि के लिए सौंदर्य, करुणा, प्रेम और जीवन की पुनर्चना का प्रतीक बन गया है। इससे कविता में भावनात्मक गहराई आती है।

प्रश्न 10: पंत जी की भाषा की प्रमुख विशेषता क्या है?

उत्तर: सुमित्रानंदन पंत की भाषा अत्यंत काव्यात्मक, भावप्रधान और चित्रात्मक है। उन्होंने संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग कर सुंदर उपमाएँ, अनुप्रास और कल्पना का संयोजन किया है। उनकी भाषा में सौंदर्य और संगीतात्मकता का अद्भुत मेल दिखाई देता है।

प्रश्न 11: कविता में प्रयुक्त एक उपमा बताइए और उसका अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'ज्यों जलद ने घेर ली हो प्रियतम को बाहों में' – यह उपमा पर्वतों को घेरे हुए बादलों की स्थिति को प्रेममय आलिंगन से जोड़ती है। इससे बादल और पहाड़ के दृश्य में भावनात्मक सौंदर्य जुड़ जाता है और प्रकृति प्रेम का प्रतीक बनती है।

प्रश्न 12: 'घन घन गंभीर गगन गूँज' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर: इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है क्योंकि 'घ' और 'ग' ध्वनियों की पुनरावृत्ति हो रही है। इससे वर्षा से पहले के गगन की गंभीरता और गूँज का ध्वन्यात्मक चित्रण होता है, जो कविता को श्रव्य सौंदर्य प्रदान करता है।

प्रश्न 13: 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता किस काव्यधारा से संबंधित है?

उत्तर: यह कविता छायावादी काव्यधारा से संबंधित है। छायावाद में आत्माभिव्यक्ति, प्रकृति चित्रण, सौंदर्यबोध और कल्पना की प्रधानता होती है। सुमित्रानंदन पंत की यह रचना इन सभी विशेषताओं को समेटे हुए एक सुंदर छायावादी काव्य उदाहरण है।

प्रश्न 14: सुमित्रानंदन पंत की प्रकृति प्रेम की भावना कैसे व्यक्त होती है?

उत्तर: पंत जी की कविता में प्रकृति से उनका प्रेम हर पंक्ति में झलकता है। वे प्रकृति को जीवंत और मानवीय भावों से युक्त मानते हैं। वर्षा के सौंदर्य को प्रेममय, करुणामय और जीवनदायी रूप में दर्शाकर उन्होंने प्रकृति से आत्मीयता प्रकट की है।

प्रश्न 15: कविता में वातावरण की गंभीरता कैसे प्रस्तुत की गई है?

उत्तर: कविता में 'घन घोर गगन' और 'चिर विरस चित्र' जैसे शब्दों से वातावरण की गंभीरता दर्शाई गई है। कवि ने बादलों की गूँज, अंधकार और नीरवता को उकेरकर वर्षा से पूर्व की गंभीर और रहस्यमयी स्थिति को व्यक्त किया है।

प्रश्न 16: 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता का शीर्षक कितना उपयुक्त है?

उत्तर: यह शीर्षक अत्यंत उपयुक्त है क्योंकि कविता में वर्षा ऋतु का दृश्य पर्वतीय क्षेत्र में वर्णित है। शीर्षक से ही पाठक को कविता के विषय और भावभूमि का संकेत मिल जाता है, जिससे कविता की विषयवस्तु स्पष्ट और प्रभावी बनती है।

प्रश्न 17: कविता में किस भाव का प्रमुख स्थान है – सौंदर्य, प्रेम या करुणा?

उत्तर: कविता में सौंदर्य भाव का प्रमुख स्थान है। पंत जी ने पर्वतीय वर्षा को अत्यंत सुंदर और मनोहारी रूप में प्रस्तुत किया है। इस सौंदर्य में प्रेम और करुणा भी मिश्रित हैं, परंतु सौंदर्यबोध सबसे प्रमुख रूप से प्रकट होता है।

प्रश्न 18: कविता में पहाड़ों का चित्रण किस प्रकार किया गया है?

उत्तर: कवि ने पहाड़ों को बादलों से घिरे हुए दिखाया है, मानो कोई प्रिय उन्हें बाहों में भर रहा हो। पहाड़ स्थिर, शांत और गंभीर प्रतीत होते हैं। यह चित्रण पाठक के मन में प्रेम, रहस्य और आत्मीयता की भावना उत्पन्न करता है।

प्रश्न 19: कविता में 'प्रियतम' शब्द किसका प्रतीक है?

उत्तर: कविता में 'प्रियतम' शब्द पर्वत का प्रतीक है, जिसे बादल आलिंगनबद्ध करते हैं। यह उपमा मानवीय प्रेम को प्रकृति में देखने की कोशिश है, जहाँ कवि बादलों और पहाड़ों के संबंध को एक आत्मीय और भावनात्मक रूप देता है।

प्रश्न 20: सुमित्रानंदन पंत की यह कविता पाठक को कैसे प्रभावित करती है?

उत्तर: यह कविता पाठक के मन में प्रकृति के प्रति संवेदना, सौंदर्यबोध और कल्पना की शक्ति जाग्रत करती है। सुमित्रानंदन पंत की कोमल भाषा, चित्रात्मक शैली और भावनात्मक गहराई पाठक को कविता से आत्मीय संबंध जोड़ने के लिए प्रेरित करती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के रचयिता कौन हैं?

- A) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
- B) जयशंकर प्रसाद
- C) सुमित्रानंदन पंत
- D) महादेवी वर्मा

उत्तर: C) सुमित्रानंदन पंत

2. 'पावस' शब्द का क्या अर्थ है?

- A) वसंत
- B) वर्षा ऋतु
- C) शरद
- D) ग्रीष्म

उत्तर: B) वर्षा ऋतु

3. 'ज्यों जलद ने घेर ली हो प्रियतम को बाहों में' - यह किस अलंकार का उदाहरण है?

- A) उपमा
- B) रूपक
- C) अनुप्रास
- D) उत्प्रेक्षा

उत्तर: A) उपमा

4. कविता किस काव्यधारा से संबंधित है?

- A) प्रगतिवाद
- B) रहस्यवाद
- C) छायावाद
- D) राष्ट्रवाद

उत्तर: C) छायावाद

5. कवि ने किस प्राकृतिक दृश्य का चित्रण किया है?

- A) सर्दी का दिन

- B) वसंत की सुबह
- C) पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा
- D) रात्रि का दृश्य

उत्तर: C) पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा

6. कविता में 'नभ का चिर विरस चित्र' किसे दर्शाता है?

- A) आकाश की सुंदरता
- B) चंद्रमा का प्रकाश
- C) बादलों से ढका उदास आकाश
- D) रंग-बिरंगे इंद्रधनुष

उत्तर: C) बादलों से ढका उदास आकाश

7. 'घन घोर गगन' में कौन-सा अलंकार है?

- A) अनुप्रास
- B) उपमा
- C) यमक
- D) उत्प्रेक्षा

उत्तर: A) अनुप्रास

8. कविता में किस भावना की प्रधानता है?

- A) देशभक्ति
- B) रहस्य
- C) सौंदर्यबोध
- D) विरोध

उत्तर: C) सौंदर्यबोध

9. कवि ने प्रकृति को किस दृष्टि से देखा है?

- A) वैज्ञानिक
- B) भावनात्मक
- C) ऐतिहासिक
- D) आलोचनात्मक

उत्तर: B) भावनात्मक

10. 'प्रियतम' शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है?

- A) नदी के लिए
- B) बादलों के लिए
- C) पर्वत के लिए

D) आकाश के लिए

उत्तर: C) पर्वत के लिए

11. पंत जी की भाषा की विशेषता क्या है?

A) कठोरता

B) सरलता

C) चित्रात्मकता और संगीतात्मकता

D) व्यावसायिकता

उत्तर: C) चित्रात्मकता और संगीतात्मकता

12. कविता का शीर्षक 'पर्वत प्रदेश में पावस' क्यों उपयुक्त है?

A) क्योंकि यह वसंत पर आधारित है

B) क्योंकि यह शहर की वर्षा पर आधारित है

C) क्योंकि इसमें पर्वतीय वर्षा का वर्णन है

D) क्योंकि इसमें सर्दी का वर्णन है

उत्तर: C) क्योंकि इसमें पर्वतीय वर्षा का वर्णन है

13. कवि ने पर्वतों को कैसे चित्रित किया है?

A) गतिशील

B) शांत और स्थिर

C) क्रोधित

D) निर्जीव

उत्तर: B) शांत और स्थिर

14. कविता में कौन-सा ऋतु वर्णन मिलता है?

A) शरद

B) पावस (वर्षा)

C) हेमंत

D) ग्रीष्म

उत्तर: B) पावस (वर्षा)

15. 'जलद' का अर्थ क्या है?

A) जल

B) सूर्य

C) बादल

D) झील

उत्तर: C) बादल

16. कविता में 'प्रकृति का नव श्रृंगार' का क्या तात्पर्य है?

- A) प्रकृति की सजावट व सौंदर्य
- B) मेकअप
- C) फैशन
- D) फूलों का व्यापार

उत्तर: A) प्रकृति की सजावट व सौंदर्य

17. कवि ने बादलों को किससे तुलना की है?

- A) राक्षस से
- B) प्रेमी से
- C) शिक्षक से
- D) देवता से

उत्तर: B) प्रेमी से

18. 'गगन घटा घन घोर गभीर' – इन शब्दों में किस ध्वनि का प्रयोग प्रमुख है?

- A) ट
- B) घ
- C) स
- D) झ

उत्तर: B) घ

19. छायावाद की प्रमुख विशेषता क्या है?

- A) विज्ञान
- B) राष्ट्रवाद
- C) आत्माभिव्यक्ति और प्रकृति सौंदर्य
- D) तर्क

उत्तर: C) आत्माभिव्यक्ति और प्रकृति सौंदर्य

20. सुमित्रानंदन पंत का जन्म किस राज्य में हुआ था?

- A) उत्तर प्रदेश
- B) उत्तराखंड
- C) बिहार
- D) हिमाचल प्रदेश

उत्तर: B) उत्तराखंड

"पर्वत प्रदेश में पावस" पाठ पर आधारित True or False (सही या गलत)

- सुमित्रानंदन पंत छायावादी युग के कवि हैं।
उत्तर: सही
- "पर्वत प्रदेश में पावस" कविता में ग्रीष्म ऋतु का वर्णन है।
उत्तर: गलत
- इस कविता में कवि ने वर्षा ऋतु के सौंदर्य का चित्रण किया है।
उत्तर: सही
- कविता में बादलों की तुलना प्रेमी से की गई है।
उत्तर: सही
- 'पावस' का अर्थ गर्मी होता है।
उत्तर: गलत
- कवि ने कविता में नगर जीवन का वर्णन किया है।
उत्तर: गलत
- 'जलद' शब्द का अर्थ है बादल।
उत्तर: सही
- 'प्रियतम' शब्द का प्रयोग आकाश के लिए किया गया है।
उत्तर: गलत
- कविता में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है।
उत्तर: सही
- कविता में भावनाओं की प्रधानता नहीं है।
उत्तर: गलत
- सुमित्रानंदन पंत का जन्म उत्तराखंड में हुआ था।
उत्तर: सही
- छायावाद में कल्पनाशीलता और प्रकृति सौंदर्य प्रमुख होते हैं।
उत्तर: सही
- कविता में पर्वत को क्रोधित रूप में दिखाया गया है।
उत्तर: गलत
- 'घन घोर गगन' में 'घ' ध्वनि की आवृत्ति अनुप्रास अलंकार का उदाहरण है।
उत्तर: सही

- कवि ने कविता में समुद्र का वर्णन किया है।
उत्तर: गलत
- पंत जी की भाषा में चित्रात्मकता और संगीतात्मकता है।
उत्तर: सही
- 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में सामाजिक समस्याओं का वर्णन किया गया है।
उत्तर: गलत
- यह कविता प्रकृति के प्रति कवि के प्रेम को दर्शाती है।
उत्तर: सही
- छायावादी कविता में देशभक्ति की भावना प्रमुख होती है।
उत्तर: गलत
- 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता सौंदर्य और संवेदना का सुंदर संगम है।
उत्तर: सही

"पर्वत प्रदेश में पावस" पर आधारित रिक्त स्थान भरिए -

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:

1. सुमित्रानंदन पंत का जन्म _____ में हुआ था।
उत्तर: कौसानी, उत्तराखंड
2. "पर्वत प्रदेश में पावस" कविता में वर्णित ऋतु है _____।
उत्तर: पावस ऋतु
3. "पर्वत प्रदेश में पावस" कविता _____ कविता शैली की उदाहरण है।
उत्तर: छायावादी
4. पंत जी ने कविता में _____ का जीवंत चित्रण किया है।
उत्तर: प्रकृति
5. "झरते हैं झाग भरे _____" पंक्ति में कवि ने निर्झर का वर्णन किया है।
उत्तर: निर्झर
6. "पल-पल परिवर्तित _____ वेश" में रिक्त स्थान की पूर्ति करें।
उत्तर: प्रकृति

7. कविता में पर्वत को _____ के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
उत्तर: *मेखलाकार*
8. "नीचे जल में निज _____" - पंक्ति को पूरा करें।
उत्तर: *महाकार*
9. कवि ने झरनों की तुलना _____ की लड़ियों से की है।
उत्तर: *मोती*
10. "है टूट पड़ा भू पर _____" - पंक्ति पूरी करें।
उत्तर: *अंबर*
11. कविता में 'गिरि' शब्द का अर्थ है _____।
उत्तर: *पर्वत*
12. पंत जी को _____ विचारों का भी प्रभाव मिला।
उत्तर: *महात्मा गांधी और मार्क्स*
13. कवि ने मेघों की तुलना _____ से की है।
उत्तर: *इंद्रजाल*
14. "अनिमेष, अटल, कुछ _____" - इस पंक्ति को पूरा करें।
उत्तर: *चिंतापर*
15. कवि ने 'ताल' को _____-सा बताया है।
उत्तर: *दर्पण*
16. "उड़ गया अचानक लो _____" - रिक्त स्थान भरो।
उत्तर: *भूधर*
17. "धँस गए धरा में सभय _____" - पंक्ति पूरी करें।
उत्तर: *शाल*
18. पंत जी की कविताओं में _____ सौंदर्य की भरपूर झलक है।
उत्तर: *प्राकृतिक*
19. "गिरिवर के उर से उठ-उठ कर, उच्चाकांक्षाओं से _____" - रिक्त स्थान भरो।
उत्तर: *तरुवर*
20. सुमित्रानंदन पंत को हिंदी का पहला _____ पुरस्कार मिला था।
उत्तर: *ज्ञानपीठ*